गुरु-वंदना : संगीत-साधना

अमृता प्रीतम लिखती हैं—

आस्थाएं टूट जाती हैं, टूट जाने दो,
वो रंग रहेगा।
जिनको पहचान होगी,
उनके लिए वो हमेशा रहेगा।

गुरु तो सदा ही मौजूद रहता है, जब भी शिष्य उसकी जरूरत महसूस करेगा, वह मौजूद होगा। और गुरु-शिष्य का संबंध तो अटूट है। ओशो कहते हैं-

"गुरु और शिष्य के बीच जो संबंध है, वह विचार का नहीं है—वह श्रद्धा का है, वह प्रेम का है। वह अत्यंत आत्मीय संबंध है। उससे बड़ा आत्मीय कोई संबंध जगत में नहीं है। और जिससे आत्मा का संबंध है, उससे ही परमात्मा की उपलब्धि हो सकेगी।"

उस्ताद उस्मान खान

नई दिल्ली के फिक्की सभागार, तानसेन मार्ग में 10 सितंबर को शास्त्रीय संगीत की एक खूबसूरत संध्या सम्पन्न हुई। ओशो वर्ल्ड फाउंडेशन की ओर से आयोजित 'गुरु वंदना' विशेष रूप से गुरु और शास्त्रीय संगीत को समर्पित थी, जिसे अपने गायन और संगीत से सजाया उस्ताद एफ. वासिफुद्दीन डागर साहब और उस्ताद उस्मान खान साहब ने।

डागर घराने के उस्ताद एफ. वासिफुद्दीन डागर ध्रुपद संगीतकारों से संबंध रखते हैं। आप सुप्रसिद्ध 'डागर भाइयों' में उस्ताद एन. जहीरुद्दीन डागर के भतीजे व उस्ताद एन. फैयाजुद्दीन डागर के सुपुत्र हैं। उस्ताद वासिफुद्दीन डागर अपनी जोड़ीदार प्रस्तुतियों के बावजूद अपनी एक अलग छवि, एक अलग पहचान रखते हैं।

उस्ताद उस्मान खान ने अपने सितार वादन की शिक्षा अपने पिता उस्ताद अब्दुल करीम खान से ली। उस्ताद अब्दुल करीम खान मैसूर महाराजा के दरबार के नवरत्न कहलाये जाने वाले उस्ताद रहमत खान के सुपुत्र हैं। उस्ताद उस्मान खान का संगीत के प्रति अथाह प्रेम और कभी न डगमगाने वाली भक्ति ने उन्हें इस मुकाम पर पहुंचाया कि आज वे स्वयं रागों की रचना के लिए जाने जाते हैं। न केवल भारत में, अपितु संसार में आपके अनेकों विद्यार्थी हैं, जिन्हें आपसे संगीत की शिक्षा हासिल होने का सौभाग्य मिलता है। सुप्रसिद्ध संगीतकार प्रेम जोशुआ भी आपसे प्रेरित हैं।

उस्ताद एफ. वासिफुद्दीन डागर

कार्यक्रम के आरंभ में संगीत पर ओशो के विचारों को सुना गया। उसके बाद उस्ताद डागर साहब ने 'गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा..' से गुरु की वंदना आरंभ की। तत्पश्चात् अपनी शैली में उन्होंने राग ध्रुपद और यमन गाकर समा को बांधे रखा। श्री मोहन श्याम शर्मा ने पखावज और मा शशिन ने तानपुरे पर उनका साथ दिया।

एक छोटे से मध्यांतर के बाद उस्ताद उस्मान खान ने ओशो तथा पूना कम्यून के अपने अनुभवों को सबसे शेयर करते हुए कहा कि ओशो का 'संगीत और संगीतकारों से गहरा लगाव था। मुझे याद है अपना प्रवचन आरंभ करने से पूर्व वे संगीत के साथ ध्यान कराया करते थे। एक बार ध्यान के दौरान उनके सम्मुख सितार बजाने का सौभाग्य मुझे भी मिला था।' और फिर उन्होंने सितार से जो तरंग पैदा की उसने संगीत का एक अलग ही वातावरण बन गया। श्री अकरम खान ने तबले पर उनका साथ दिया।

संगीत एक अनुभव है, एक आचरण है, जो जीवन को काव्य और सौंदर्य से परिपूर्ण बनाता है। संगीत के संबंध में ओशो ने कहा है—

"संगीत साधना है। संगीत की साधना से अपने आप काव्य का आविर्भाव होता है, काव्य है संगीत की अभिव्यक्ति। काव्य है संगीत की देह। और जैसे ही संगीत का जन्म होता है, वैसे ही सौंदर्य का बोध पैदा होता है। संगीत की संवेदनशीलता में ही जो अनुभव होता है अस्तित्व का, उस अनुभव का नाम सौंदर्य है।"

इसी शृंखला की एक अन्य प्रस्तुति 08 अक्टूबर को फिक्की सभागार में प्रस्तुत की गई। 'दि रिवॉल्यूशन विदिन'—डॉ. मल्लिका साराभाई द्वारा निर्देशित इस नृत्य नाटिका में स्त्री के सत्याग्रही आचरण को उन्होंने नृत्य और अभिनय के अपने खास अंदाज़ में पेश किया।

ओशो प्रवचन से संध्या का शुभारंभ हुआ। श्री अशगर हुसैन ने वायलन प्रस्तुत कर कार्यक्रम को संगीतमय गति दी। श्री अरशद खान ने उनका तबले

पर साथ दिया और उनके शिष्य श्री कृष्णनन ने सितार पर उन्हें संगत दी। श्री हुसैन के पिता उस्ताद अनवर हुसैन अपने समय के प्रसिद्ध तबला वादक थे। बचपन से ही संगीत के वातारण में पले-बड़े श्री हुसैन का सुर-ताल के प्रति लगाव स्वभाविक है। संगीत की आरंभिक शिक्षा उन्होंने उस्ताद गौहर अली खान से प्राप्त की। उसके पश्चात् दिल्ली घराने के उस्ताद ज़हूर अहमद खान से उन्होंने वायलन की शिक्षा हासिल की। आपने अनेक कार्यक्रमों में समूह संगीत और जुगलबंदी से अपनी कला को प्रस्तुत किया। कई एलबम्स की रचना का श्रेय भी आपको जाता है।

श्री अशगर हुसैन

'दि रिवॉल्यूशन विदिन'—प्रसिद्ध लेखक श्री झवेरचंद मेघानी द्वारा रचित यह कहानी सदुबा नामक एक स्त्री की है। डॉ. मलिका साराभाई ने 'सदुबा' किरदार के माध्यम से सत्याग्रह (सत्य को जानने का मनोविज्ञान) को परिभाषित किया। डॉ. साराभाई को किसी विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं। उन्होंने अपने अभिनय, नृत्य, गायन, अदाकारी, लेखन और अनेक नाटकों में सधे हुए निर्देशन द्वारा भारतीय कलामंच में अपनी एक अलग जगह बनाई है। अनेक किरदारों द्वारा स्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व को पेश करने का श्रेय डॉ. साराभाई को विशेष रूप से जाता है। यह नृत्य नाटिका मूलतः अंग्रेजी में थी, किंतु सभी गीत गुजराती और हिन्दी में पेश किये गये।

तक बांधे रखा। ध्यान और अध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार ही ओशो वर्ल्ड फाउंडेशन का प्रयास है। वर्ष 2006 ओशो के 75वें जन्मोत्सव को समर्पित रहा। जनवरी माह में ज़िला ख़ान ने अपने गायन से इसे आरंभ किया। अप्रैल में 'राजा' नाटक का कमानी सभागार में दो बार आयोजन हुआ, जिसका निर्देशन डॉ. संजीव जौहरी ने किया। जुलाई माह में डॉ. लवलीन थडानी के निर्देशन में 'वन विद दि स्काई' नाटिका एल.टी.जी. सभागार में प्रस्तुत की गई। सितंबर में उस्ताद उस्मान खान और उस्ताद वासिफुद्दीन डागर की संगीतमय संध्या का आयोजन फिक्की सभागार में हुआ। और अक्टूबर का माह डॉ. मल्लिका साराभाई ने अपनी नृत्य-नाटिका 'रिवॉल्यूशन विदिन' और श्री अशगर हुसैन ने वायलन के सुरों से सजाया। संगीत और आनंद का यह उत्सव नवंबर और दिसंबर माह में भी जारी रहेगा, जिसके अंतर्गत 10 नवंबर को नई दिल्ली के एम्फी थियेटर, अंसल प्लाज़ा में प्रसिद्ध कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा की अध्यक्षता में हास्य कवि सम्मेलन, 12 नवंबर को फिक्की सभागार में इलियाना की नृत्य प्रस्तुति 'तंत्र' और 03 दिसंबर को शुभा मुद्गल और प्रेम जोशुआ के गायन-संगीत की संध्या आयोजित होगी। इसके लिए आप सबको निमंत्रण है। अधिक जानकारी हेतु ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में सम्पर्क

डॉ. मल्लिका साराभाई

सराहा के गीतों पर आधारित
इलियाना चितारिस्ती की नृत्य प्रस्तुति

'तंत्र : दि सॉन्ग ऑफ महामुद्रा'

प्रस्तुति : ओशो वर्ल्ड फाउंडेशन
स्थान : फिक्की सभागार, तानसेन मार्ग, मण्डी हाउस, नई दिल्ली
समय : 12 नवंबर, 2006
सायं 7.00 बजे

ऐसे मंदिर हों—जो नृत्य के, संगीत के, हंसने के मंदिर हों। ऐसा धर्म हो—जो मुस्कुराहटों का, प्रफुल्लता का, प्रमुदित होने का धर्म हो।
– ओशो

'हास्य कवि सम्मेलन'

प्रस्तुति : ओशो वर्ल्ड फाउंडेशन
स्थान : एम्फी थियेटर, अंसल प्लाज़ा, नई दिल्ली
समय : 10 नवंबर, 2006
सायं 7.30 बजे
अध्यक्षता : सुरेंद्र शर्मा
आमंत्रित कवि : ओमप्रकाश आदित्य
महेंद्र अजनबी
अरुण जैमिनी
सीता सागर
वेद प्रकाश
विनय विश्वास

सम्पर्क सूत्र : ओशो वर्ल्ड गैलेरिया, अंसल प्लाज़ा, खेलगांव मार्ग, नई दिल्ली–110049 फोन : 011–26261616/17